विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

वर्ग-दशम्

विषय- हिन्दी

।। अध्ययन-सामग्री ।।

क्या निराश हुआ जाए

निर्देश – दी गयी सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें व समझें ।

क्या निराश हुआ जाए पाठ की व्याख्या

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी हीन हीं रह गया है।

ठगी: चालबाजी
तस्करी: चोरी से सीमा पार माल ले जाने की क्रिया
भ्रष्टाचार: अनैतिक आचरण
आरोप-प्रत्यारोप: एक-दूसरे को गलत ठहराना

जब भी लेखक समाचार-पत्रों को पढ़ते है, उनका मन उदास हो जाता है क्यूंकि समाचार-पत्रों में चालबाजी, डकैती, चोरी, चोरी से सीमा-पार माल ले जाने की क्रिया की खबरें छपती हैं। इस तरह के कर्म बहुत ही अधिक बढ़ गए है । अनैतिक आचरण, बुरा आचरण समाज में चारों तरफ फैला हुआ है। समाचार पत्र खोलकर देखिए तो आप इन सभी का जिक्र पाएँगे। ऐसा लगता है कि चारो-ओर बुराई ही बुराई है अच्छाई का कोई नाम ही नहीं है। एक-दूसरे को गलत ठहराना नजर आता है । ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है, सिर्फ बुराई ही बची है। हर व्यक्ति कानून को अपने हाथ में लेकर बेईमानी और भ्रष्टाचार कर रहा है।

हर व्यक्ति सदेंह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद पर हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं। एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सखी वही है जो कुछ नहीं करता।

हर व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को शक की नज़रसे देखता है क्योंकि उसे उस पर विश्वास ही नहीं रह गया है। जो जितने ऊँचे पद पर है उस पर हम विश्वास नहीं कर सकते है क्योंकि उसने कर्म ही ऐसे किये है कि लोग उस पर विश्वास ही नहीं करते है, हमेशा उनके दोष ही दिखाई देते है । जब उनकी किसी के साथ मुलाकात हुई थी, उन्होंने अपने विचार प्रस्तुत किये थे कि इस समय सुखी वही है जो कुछ नहीं करता, अर्थात् किसी भी बात पर अपना पक्ष नहीं रखता या किसी से कोई व्यवहार नहीं रखता वही व्यक्ति इस दुनिया में सुखी है।

जो कुछ भी करेगा उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दिख रहा है, गुणी कम या बिलकुल ही नहीं।

दोष: बुराई
गुणी: अच्छाई

लोगों को आदत हो गई है व्यक्ति में बुराई खोजने की, उसमें से अच्छाई देखने का नज़रिया जैसे समाप्त ही हो गया है । उसके द्वारा किये गए अच्छे काम को ध्यान में न रखकर उसमें अवगुणों को ही बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगा है । हर व्यक्ति में कोई न कोई दोष है लेकिन उसमें अच्छाईयाँ भी है । हम उन अच्छाईयों को उजागर नहीं कर रहे है सिर्फ बुराईयों को ही बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हैं । ऐसा लगता है जैसे जो दुनिया में लोग हैं उनमें अच्छाई बची ही नहीं है, या तो थोड़ी है या बिलकुल ही नहीं है।